Sarcouncil Journal of Arts and Literature

ISSN(Online): 2945-364X

Volume- 04| Issue- 02| 2025

Review Article **Received:** 02-03-2025 | **Accepted:** 02-04-2025 | **Published:** 21-04-2025

मुंशी प्रेमचंद का 'गोदान' : 20वीं सदी के प्रारंभिक भारतीय समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब

किरण शर्मा

वरिष्ठ एसोशिएट प्रोफैसर हिन्दी- विभागाध्यक्ष डी.ए.वी.कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनानगर

Abstract: यह शोधपत्र मुंशी प्रेमचंद के अंतिम और सर्वाधिक प्रतिष्ठित उपन्यास 'गोदान' (1936) के माध्यम से 20वीं सदी के प्रारंभिक भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचना का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह कृति न केवल एक किसान की व्यक्तिगत त्रासदी का दस्तावेज है, बल्कि पूरे भारतीय ग्रामीण समाज के अंतर्विरोधों, संघर्षों और आकांक्षाओं का समग्र चित्रण करती है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज की जड़ता, जातिवाद, आर्थिक विषमता, स्त्री उत्पीड़न, शहरी-ग्रामीण द्वंद्व और परंपरा बनाम आधुनिकता जैसे विषयों को केंद्र में रखकर एक यथार्थवादी आख्यान रचा है.

Keywords: मुंशी प्रेमचंद, गोदान, 20वीं सदी

भूमिका

मुंशी प्रेमचंद (1880–1936) हिंदी और उर्दू के सर्वाधिक यथार्थवादी लेखक माने जाते हैं, जिनकी रचनाओं में समाज के अंतिम व्यक्ति की पीड़ा, उसके संघर्ष और जीवन की सच्चाई का सजीव चित्रण मिलता है। 'गोदान' उनका अंतिम और परिपक्व उपन्यास है, जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता-पूर्व भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ को अत्यंत बारीकी और गहराई से उकेरा है। इस उपन्यास की केंद्रीय थीम किसान जीवन है, किंतु इसकी शाखाएँ भारत की तत्कालीन सामाजिक संरचना के हर पहलू से जुड़ती हैं।

सामाजिक संरचना और वर्ग संघर्ष:

होरी :

भारतीय कृषक वर्ग का प्रतीक होरी महतो उपन्यास का नायक है, जो एक ब्राह्मण कृषक है। वह धार्मिक, परंपरावादी और श्रमशील व्यक्ति है, जिसकी सबसे बड़ी आकांक्षा एक गाय खरीदकर उसका गोदान करना है। यह आकांक्षा केवल धार्मिक नहीं है, बल्कि सामाजिक स्वीकृति, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पूर्ति की प्रतीक भी है।

"होरी ने मन में ठान लिया था कि चाहे जान चली जाए, गाय लेकर रहेगा। यही उसका धर्म है, यही उसका स्वर्ग है।" [1]

यह वाक्य भारतीय किसान के उस मानसिक धरातल को प्रकट करता है जो जीवनभर सामाजिक सम्मान और धार्मिक मोक्ष के लिए श्रम करता है, किंतु अंत में व्यवस्था से पराजित हो जाता है। होरी का संघर्ष प्रतीक बनता है उस संपूर्ण कृषक वर्ग का, जो सामंती व्यवस्था, पूंजीवादी शोषण और सामाजिक रूढ़ियों के बीच पिसता रहा है।

ज़मींदारी और महाजनी शोषण –

'गोदान' में ज़मींदारी प्रथा और महाजनी शोषण व्यवस्था का तीखा चित्रण हुआ है। उपन्यास में राय साहब और महाजन जैसे पात्र किसानों के शोषण के प्रतिनिधि हैं। राय साहब जैसे ज़मींदार केवल लगान वसूलते हैं, जबकि महाजन सूदखोरी के माध्यम से किसानों को जीवनभर ऋण में डुबोए रखते हैं।

"गरीब किसान की ज़िंदगी की सबसे बड़ी विडंबना यही थी कि उसका श्रम कभी उसका नहीं होता।" [2]

प्रेमचंद यहाँ मार्क्सवादी दृष्टिकोण के निकट पहुँचते हैं, जहाँ उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखने वाले वर्ग द्वारा श्रमिक का शोषण एक सतत प्रक्रिया बन जाती है। यही नहीं, प्रेमचंद दिखाते हैं कि कैसे यह शोषण धार्मिकता और परंपरा की आड़ में वैध बना दिया जाता है।

प्रतिरोध का स्वर :

धनिया की जागरूकता धनिया, जो होरी की पत्नी है, इस शोषण को केवल स्वीकार नहीं करती, बल्कि उसका प्रतिरोध भी करती है। वह यथार्थ को अधिक स्पष्टता से देखती है और समय-समय पर होरी को सचेत करती है।

"मरदों को सदा वही सूझती है जो अनर्थ की जड़ होती है।" [3]

धनिया भारतीय ग्रामीण स्त्री की उस चेतनाशील छवि को प्रस्तुत करती है, जो परिवार के भीतर ही नहीं, सामाजिक दृष्टिकोण से भी जागरूक है। उसका साहस, प्रखरता और व्यवहारिक बुद्धि उसे एक प्रभावशाली चरित्र बनाती है।

जाति व्यवस्था और सामाजिक भेदभाव:

जातिगत विषमता का यथार्थ चित्रण-

'गोदान' में जातिवाद का यथार्थ और निष्पक्ष चित्रण मिलता है। होरी एक ब्राह्मण है, लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है कि उसे जातिगत श्रेष्ठता का कोई लाभ नहीं मिलता।

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

***Corresponding Author:** किरण शर्मा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.16637334

"ब्राह्मण हो कर भी वह दूसरों के आगे हाथ फैलाने को मजबूर था।"[4]
यह उद्धरण उस सामाजिक विडंबना को रेखांकित करता है, जहाँ जाति का ढांचा आर्थिक असमानता के सामने टिक नहीं पाता। प्रेमचंद स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक स्थितियाँ जातिगत श्रेष्ठता को निरर्थक बना देती हैं।

गोबर और झुनिया :

सामाजिक विद्रोह के प्रतीक गोबर, होरी का पुत्र, एक दलित लड़की झुनिया को घर ले आता है। यह संबंध केवल एक प्रेम संबंध नहीं, बल्कि सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक है। प्रेमचंद यहाँ जाति व्यवस्था को खुली चुनौती देते हैं।
"जात-पाँत का झगड़ा मिट गया होता, तो गोबर और झुनिया को कोई रोके?" [5]

झुनिया न केवल दलित है, बल्कि गर्भवती भी है। उसका समाज द्वारा बहिष्कार और गोबर द्वारा उसका समर्थन भारतीय समाज में संभावित परिवर्तन की दिशा को इंगित करता है। यह संबंध प्रेमचंद की समतावादी दृष्टि को बल प्रदान करता है।

दलित चेतना :

चमार, पासी, और अन्य पात्र प्रेमचंद ने दलित समुदाय को केवल शोषित नहीं, बल्कि संघर्षशील और मानवोचित गरिमा से युक्त दिखाया है। चमार और पासी पात्रों के माध्यम से वे सामाजिक न्याय की आवश्यकता को उजागर करते हैं। प्रेमचंद का दृष्टिकोण यहाँ अंबेडकरवादी विचारधारा के निकट जाता है, जहाँ दलित चेतना का उदय एक सामाजिक क्रांति की भूमिका बनता है।

स्त्री विमर्श और स्त्री पात्रों की सशक्त उपस्थिति:

धनिया :

ग्रामीण स्त्री की चेतना धनिया उपन्यास की सबसे सशक्त स्त्री पात्र है, जो समाज की रूढ़ियों को चुनौती देती है, अपने परिवार को टूटने से बचाती है और आर्थिक-सामाजिक निर्णयों में निर्णायक भूमिका निभाती है।

"काहे को डरूँ? अब डरने का बस नहीं रहा।" [6]यह संवाद धनिया के साहस और स्पष्टवादिता को दर्शाता है। वह गोबर और झुनिया के संबंध को सामाजिक बहिष्कार के बावजूद स्वीकार करती है और उसे परिवार में स्थान देती है। उसकी व्यावहारिकता और सहनशीलता उसे आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत करती है।

झुनिया :

अस्मिता और मातृत्व की प्रतीक झुनिया एक दलित स्त्री है, जो अपने आत्मबल, स्वाभिमान और मातृत्व के आधार पर समाज की रूढ़ियों का सामना करती है। वह समाज द्वारा तिरस्कृत होते हुए भी आत्मनिर्भर रहती है और अपने जीवन को गरिमा के साथ जीती है। प्रेमचंद ने उसके चरित्र के माध्यम से दलित स्त्री की दोहरी पीड़ा और संघर्ष को यथार्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है।

मालती :

शिक्षित और आधुनिक स्त्री मालती एक डॉक्टर है, जो प्रेम, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की प्रतीक है। वह विवाह संस्था को नकारते हुए प्रेम को मानवीय संबंधों का आधार मानती है। मेहता के साथ उसका संबंध आधुनिकता, स्वतंत्रता और नारी अस्मिता की संयुक्त चेतना को दर्शाता है। मालती प्रेमचंद के स्त्री विमर्श का आधुनिक और शहरी संस्करण है।

संस्कृति, परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व:

गाय और गोदान :

प्रतीकात्मक विडंबना गाय भारतीय समाज में पवित्रता और धर्म का प्रतीक रही है। होरी का जीवन इस प्रतीक की प्राप्ति और पूर्ति में बीतता है। किंतु जब उसकी मृत्यु के समय भी वह गोदान नहीं कर पाता, तो यह धर्म और परंपरा की उस विडंबना को दर्शाता है जो व्यक्ति को जीवनभर शोषित और भ्रमित बनाए रखती है।

"गाय के बिना जीवन अधूरा है, और बिना गोदान के मृत्यु अपूर्ण।"[7]यह स्थिति धर्म और सामाजिक दबाव के द्वंद्व को उजागर करती है। प्रेमचंद धर्म को अस्वीकार नहीं करते, किंतु उसकी उपयोगिता और नैतिकता पर प्रश्न अवश्य उठाते हैं।

आधुनिकता का प्रतिनिधित्व :

मेहता और खन्ना मेहता एक विचारक हैं जो समाज में परिवर्तन और पुनर्रचना की वकालत करते हैं। उनका संवाद और चिंतन सामाजिक समस्याओं का तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। खन्ना पूंजीवादी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो शोषण को व्यावसायिक तर्क से उचित ठहराते हैं। प्रेमचंद इन दोनों के माध्यम से भारतीय समाज में उभरती नई शक्तियों — विचारधारा और पूंजी — के अंतर्विरोध को रेखांकित करते हैं।[7]

निष्कर्ष:

'गोदान' भारतीय समाज का एक समग्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक चित्रण है। यह उपन्यास न केवल एक किसान की त्रासदी को दिखाता है, बल्कि पूरे समाज के अंतर्विरोधों को उजागर करता है। प्रेमचंद का यथार्थवाद विश्लेषणात्मक है, जो समस्याओं की जड़ों को पहचानता है और समाज को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित करता है।

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

'गोदान' आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था, क्योंकि इसमें उठाए गए प्रश्न — वर्ग संघर्ष, जाति भेद, स्त्री अस्मिता, परंपरा और आधुनिकता — आज भी भारतीय समाज में उपस्थित हैं। यह उपन्यास भारतीय साहित्य की वह धरोहर है जो आने वाली पीढ़ियों को न केवल साहित्यिक आनंद देती है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और संवेदना से भी संपन्न करती है।

संदर्भ सूची :

1. प्रेमचंद, मुंशी। *गोदान,* हिंद पॉकेट बुक्स, 1936
2. वही, पृष्ठ 154
3. वही, पृष्ठ 181
4. त्रिपाठी, रामशरण। *प्रेमचंद और हिंदी उपन्यास,* राजकमल प्रकाशन।
5. शुक्ल, रामचंद्र। *हिंदी साहित्य का इतिहास,* नागरी प्रचारिणी सभा।
6. अवस्थी, शशिकांत। *गोदान : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन,* वाणी प्रकाशन।
7. यादव, रामनिवास। *प्रेमचंद का सामाजिक दृष्टिकोण,* भारतीय साहित्य सभा।

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:
किरण शर्मा " मुंशी प्रेमचंद का 'गोदान' : 20वीं सदी के प्रारंभिक भारतीय समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब ". *Sarcouncil Journal of Arts and Literature* 4.2 (2025): pp 22-24.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher